प्रस्तावना.

पाठकों ! वैशाख मास मे जो अक्षय तृतीया शुक्ल पक्ष में आती है वो दिन वर्षी तप के पारणे का है यह पर्व किस हेतु से हुआ ? इसका नाम अक्षय तृतीया क्यों पडा ? इस पर्व आराधन में क्या २ करना ? उस रोज किसने, किसको पारणा कराया ? आदि बातों का सब अधिकार गुजराती पुस्तक परसे हिन्दी में अनुवाद कर इस पुस्तक में रखा है इसके अतिरिक्त भक्ति गर्भित एक दो स्तवन भी है

अतेम बीस स्थानक तपस्या के काउसग्ग, खमासमण साथिये आदि की विधि डाल के पुस्तक को और भी उपयोगी बनाने की कोशिश की गई है.

बालापुर (बरार) निवासी सेठ लालचंदजी खुशाल-चंदजी की दाहिनी स्वर्गवासी बेन झनबाई के स्मरणार्थ इनमें से १००० पुस्तकों के प्रकाशन में द्रव्य सहायता मिली है । यद्यपि य १००० पुस्तक भेट स्वरूप ही देना थी परन्तु लोग मुफ्त की किताब की कदर नहीं करते और ज्ञानकी आशातना कर बैठते हैं अत ज्ञानकी आशात ना भी न हो तथा इसकी बिक्री से आये हुये द्रव्य में दूसरे ट्रेक्ट प्रकाशित करने के हेतु से बहुत अल्प कीमत रखी गई है तथापि पाठशाला, लायब्रेरी, ज्ञान भडार, साधु साध्वी के लिये भेट देने का रक्खा है आशा है पाठगण इससे लाभ उठावेंगे

बालापुर (बरार)
श्रावण सुदी १ स १९८३ } मुनि मानसागर
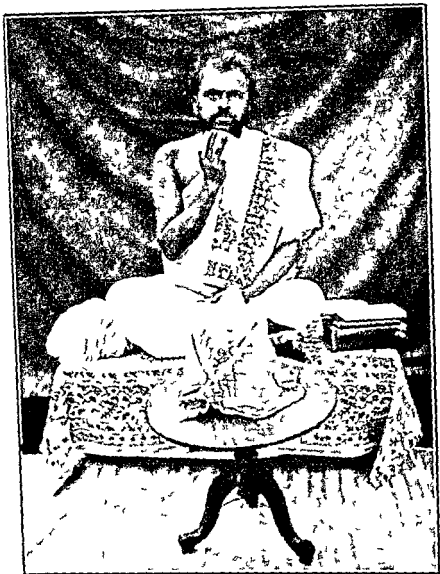
आगमोद्धारक आचार्य श्रीमद् आनन्दसागरसूरीश्वरजी के लघु शिष्य,
मुनिराज श्री मानसागरजी महाराज.

वंदे पार्श्वम

श्री अक्षयतृतीया कथानकम्

श्री ऋषभदेव स्वामी का आत्मा सर्वार्थ सिद्ध विमान से निकल कर आषाढ वदी चतुर्थी के दिन नाभिकुलकर की भार्या श्री मरुदेवा स्वामिनी के गर्भ मे व्याप्त हुआ नव मास और चार दिन गर्भ मे रह कर चैत्र वदी अष्टमी के दिन अर्द्धरात्रि के समय भगवान का जन्म हुआ उस समय त्रिलोक मे प्रकाश हुआ क्षण मात्र नारकी के जीवोको भी सुख उत्पन्न हुआ पश्चात् छप्पन दिक्कुमारिकाओं के भी आसन कपायमान हो गये वे सब अवधिज्ञान द्वारा भगवान का जन्म हुआ जान कर जन्म स्थान मे आई, और अपना अपना कर्तव्य पालन करके अपने अपने स्थान को चली गई.

तत्पश्चात् चौसठ इन्द्रो के आसन कपित हुए उन्होने भी अवधिज्ञान द्वारा भगवान का जन्म हुआ जानकर त्रेसठ इन्द्र तो मेरु पर्वत पर गये, और सौधर्मेन्द्र ने जन्म स्थान मे आकर माता

मरुदेवा को अवस्वापिनी निद्रा देकर, माता के पास भगवान का प्रतिबिम्ब छोड़कर, श्री भगवान को दोनों हाथों में ले मेरु पर्वत पर गया वहा चौसठों इन्द्रों ने मिलकर स्नात्रमहोत्सव किया तत्पश्चात् त्रेसठ इन्द्र तो वहा से नन्दीश्वर द्वीप को चले गये, और सौधर्मेन्द्र ने भगवान की माता के पास बालक को रख उनकी अवस्वापिनी निद्रा तथा प्रतिबिम्ब निवारण कर दोनों को प्रणाम कर नदीश्वर द्वीप को गया वहा पुन चौसठों इन्द्रों ने मिलकर अट्ठाई महोत्सव किया, और अपने २ स्थान को चले गये

इन्द्र ने प्रभु के अगुठे मे अमृत का सचार किया है उसी को ही चूसते है, मगर माता का दुग्ध पान नहीं करते। भगवान का ऋषभ नाम स्थापन हुआ इन्द्र ने इक्ष्वाकु वश की स्थापना की

श्री भगवान बीस लाख पूर्व वर्ष पर्यन्त कुमार-अवस्था मे रहे इन्द्र ने विनीता नगरी बसाकर भगवानका राज्याभिषेक किया, त्रेसठ लाख पूर्व वर्ष तक भगवान ने राज्य पदका भोग किया उनके सुनन्दा और सुमगला नाम दो रानियो से भरत, बाहुबल आदिक सौ पुत्र तथा आदित्य, सौमयशादि बहुत से पौत्र उत्पन्न हुए

तत्पश्चात श्री भगवान ने अयोध्या का राज्य भरतको, तक्षशिला का राज्य बाहुबलि को, तथा अन्य पुत्रोंको भी योग्यतानुसार देश, नगर देकर दीक्षा ग्रहण की, और आहार निमित्त ग्राम ग्राम भ्रमण करने लगे परन्तु नागरिक मनुष्य साधु को आहार देने की विधिसे अनभिज्ञ होने के कारण मणि, माणिक, मुक्तादिक वस्तुए भेंट करते थे. परंतु सर्वस्व त्यागी प्रभु कुछभी स्पर्श नहीं करतेथे इस प्रकार एक वर्ष निर्जल निराहार व्यतीत होगया इसी भांति भगवान भ्रमण करते करते गजपुर नगर की ओर आये उसी रात्रिको बाहुबलिजी के पुत्र सोमयशाराजा, उनका पुत्र श्रेयास कुमार था. उसको स्वप्न दीखा, कि मेरु पर्वत श्यामवर्ण हो गया है, उसको मैने अमृत कलश से प्रक्षालन करके स्वच्छ किया है उसी रात्रिको सोमयशा राजाने भी स्वप्न देखा, कि एक पराक्रमी वीर बहुत से वैरियों से घिरा हुआ व्याकुल हो रहा था उसने श्रयास कुमार की सहायता से विजय पाई. और उसी रात्रिको नगरमें सुबुद्धि नामक श्रेष्ठि को भी यह स्वप्न दृष्टि गोचर हुआ, कि सूर्य मडल में से एक सहस्र किरणे पृथक आपडी हैं, उनको भी श्रेयांस कमार ने पुनः स्थापित किया प्रातःकाल

राजसभामें सबों ने रात्रिके अपने २ स्वप्न सुनाये, और विचार करने लगे, कि आज श्रेयांस कुमार को अवश्य कोई अनुपम लाभ होगा

इतने ही में श्री भगवान भी आहार निमित्त घर घर भ्रमण करते श्रेयांस कुमार के गृह पर पधारे उनको आते हुए देखकर कुमार अति हर्षित हुआ अन्य नागरिक जन यह विचार करने लगे कि भगवान पैदल भ्रमण करते हैं हाथी, घोड़े आदि भेट करने लगे किन्तु भगवान ने तो कुछ भी नहीं लिये उससे लोग उदास हो २ कर सोचने लगे, कि भगवान अपने हाथ का कुछ भी नहीं लेते इससे मालूम होता है कि अपने पर प्रभु कोपित हैं, परन्तु युगलिक धर्म त्याग न करे स्वल्प ही समय व्यतीत हुआ है इससे उन लोगों को आहार देने की विधि ज्ञात नहीं है

इधर श्रेयांस कुमार भगवान की मुख मुद्रा देखकर विचारने लगा, कि यह रूप मैंने पहिले भी कभी देखा था इस प्रकार ध्यान करते २ उसे जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ (जातिस्मरण मति ज्ञान का भेद है) उससे ज्ञात हो गया कि मैंने स्वयं भगवान के संग निरन्तर नौ भव तक सपथ किया है

प्रथम भवे श्रीभगवान धनामा सेवाह, द्वितीय भव मे युगलिक, तृतीय भवमे देवता, चतुर्थ भव मे महाबल राजा हुए उनके बाद पचम भवसे मेरा सबध हुआ

पचम भवमे ललिताग देव हुए उसी समय ललिताग देवकी स्वयप्रभा नामक देवी हुई यहा से सम्बन्ध भगवान के साथ हुआ था (१) तत्पश्चात् ललिताग देव का जीव वज्रजघ राजा और स्वयप्रभा का जीव श्रीमती रानी हुआ (२) प्रभुके सातवे भवमे हम दोनो मनुष्य हुए (३) प्रभुके अष्टम भवमे दोनो सौधर्म देवलोक में देवता हुए (४) नव मे भवमें भगवान जीवानन्द नामक वैद्य और मैं केशव नामक श्रेष्ठिपुत्र हुआ यहा भी परस्पर मे मित्रभाव रहा (५ दशवें भवमे दोनो प्राणी अच्युत देवलोक मे मित्र देव हुए (६) एकादश भवमे भगवान चक्रवर्ती और मे सारथी हुआ (७) द्वादश भवमे दोनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमान मे देवता हुए (८) तथा प्रभु के त्रयोदश भवमे श्री भगवान ऋषभदेवजी हुए, और मैं श्रेयास कुमार नामका प्रपौत्र हुआ (९) इस प्रकार नवो भवो का वृत्तान्त मैने जाति स्मरण से कहा है

उसमे स्वय इसने साधुत्व का अनुभव किया था, इससे विचार करने लगा कि ओहो! सासारिक प्राणियों मे कितना अज्ञान है? कि जो भगवान त्रिलोकनाथ है, जिन्होंने तृणवत् राज्यासन को त्यागकर तथा विषय भोगरूपी सासारिक सुखों को किंपाक (कडुवे) फल सदृष समझ साधुत्व ग्रहणकर मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करते हुए, राग द्वेषादिक के कारण भूत वस्तुओं का लेश मात्र भी ग्रहण करने की अभिलाषा नहीं करते हैं वे हाथी, घोडे, कन्या स्वर्ण, मणि मुक्तादि परिग्रहों को किस भांति स्वीकार करेंगे? इतना भी नहीं समझते है

यह विचारकर श्रेयासकुमार शीघ्रही झरोखेमे से नीचे उत्तर आया और भगवान के समीप जा हर्ष पूर्वक भगवान् की तीन प्रदक्षिणा दे नमस्कार कर उभय कर जोड प्रार्थना करने लगा, कि हे स्वामिन! मेरे ऊपर अनुग्रह कीजिए। मैं ससार रूपी दाह से पीडित हू, मेरा उद्धार कीजिए। एव अट्ठारह कोटा कोटी सागरोपम पर्यन्त विच्छेद पाये हुए साधुके प्राशुक आहार लेनेकी विधि प्रकट कीजिए तथा मेरे गृहपर भेट रूप आये हुए इक्षु रस के १०८ घडे प्राशुक आहार रूप हैं, वे आप ग्रहण करिए

चतुर्ज्ञानी भगवान ने श्रेयासकुमार के वचन सुन इक्षुरस को निर्दोष आहार समझ स्वय उसके घरसे दोनो हाथों से ग्रहण किया जो भगवान पाणिपात्र लब्धि के स्वामी हैं उन्होंने स्वय पाणि नाम हाथ तद्रूप पात्र मे इक्षुरस ग्रहण किया उसका एक बिन्दु मात्र भी भूमिपर नहीं गिरा यद्यपि ये तो केवल १०८ घडे थे किन्तु यदि सहस्त्रों, लाखों घडे हों, अथवा समुद्र के समान रस हों, तो वह भी लब्धि बल से प्रभु के हस्त रूप पात्र मे समावेश हो सकता है चाहे तो शिखा रूप मे ऊपर बढ जाय परतु पृथ्वी पर एक बूद भी नहीं गिर सकता

श्रेयांसकुमार परम कृपालु, सर्वोत्कृष्ट सुपात्र श्री ऋषभदेव स्वामी को नव कोटि विशुद्ध आहार देता हुआ मन, वचन, तथा काया की शुद्धता के कारण से अत्यंत हर्षित हो, विचार मग्न था कि त्रिलोक मे पूजनीय, अत्यंत गुण निधान श्री ऋषभदेव स्वामी ने मेरे हाथ से आहार ग्रहण कर मुझपर बडा अनुग्रह किया भगवान को प्राशुक आहार देने के कारण से आज मेरे सर्व पाप संताप नष्ट होगये इतने ही मे आकाश मे देवताओं ने पच दिव्य प्रकट किये . " अहो दान-

महो दानम्" ऐसी उद्‌घोषणा करके देवदुन्दुभी बजाई तिर्यग्जृम्भक देवताओं ने साढ़े बारह कोटि स्वर्णरत्नों की वर्षा की उसी समय श्रेयांस कुमार का गृह स्वर्णरत्नों से, तथा तीनों लोक धान्य से भर गये तथा श्री भगवान इक्षु रस से भर गये श्रेयांसकुमार का आत्मा निरुपम सुख का भागी हुआ।

यह जो वैसाख शुक्ला तृतीया के दिन श्री ऋषभदेव स्वामी का इक्षु रस द्वारा पारणा (आहार ग्रहण) हुआ सो दान श्रेयांसकुमार के लिये अक्षय सुख का कारण हुआ इसीलिये इस दिन का नाम अक्षय तृतीया अथवा इक्षु तृतीया प्रसिद्ध हुआ।

यहां कोई भी शंका करे कि श्री ऋषभदेव को एक वर्ष पर्यंत आहार का अन्तराय क्यों हुआ? तो कहते हैं कि पूर्व भव में एक समय भगवान ने मार्ग में जाते हुए देखा कि एक धान्य के खलि-हान (खला) में वृषभ (बैल) धान्य खा रहे थे इससे कृषक (किसान) उनको मार रहा था भगवान ने उसे कहा कि हे मूर्ख! इन बैलों के मुंह पर सींका [जाली] बांधो कृषक ने कहा कि हम तो नहीं बांधना जानते यह सुन भगवान ने स्वयं वहां बैठ कर

बैल के मुह पर जाली बांधकर बताई, उस बैलने ३६० निश्वास डाले, वहा जो अतराय कर्म उपार्जन किया, उसका दीक्षा ग्रहण करने के दिवस उदय हुआ और आज उसका उपशम पाया

इस दान के प्रभाव से श्रेयांस कुमार अवश्य मोक्ष पद को प्राप्त होगा

श्री भगवान एक सहस्र वर्ष तक छद्मस्थपन मे रहे तथा निन्यानवे हजार पूर्व वर्ष पर्यंत केवली पर्याय मे रह अनेक भव्य प्राणियो को प्रतिबोध कर, अष्टापद पर्वत पर आ मोक्ष को प्राप्त हुए

इसलिये अक्षय तृतीया के दिन भव्य प्राणियो ने योग्य दान देना, शील पालना, तपस्या, भावना पूजा तथा स्नात्र महोत्सव आदि करना उचित है। इतिशम

अक्षय तृतीया के वारेमें विशेषता.

आदीश्वर प्रभुने अन्तराय कर्म बांधा था इस लिये बारा महिने तक आहार पानी कुछ भी नहीं मिला तब अनायास इक्षुरसका योग आया उस वक्त वैशाख सुदी तृतीया के दिन श्रेयांस कुमार ने भाव से रस वहोराकर प्रभु को पारणा कराया

इस जमाने में उस महातपस्वी मूर्ति के कार्य की अनुमोदना करने के वास्ते अनेक भी वर्षीतप करते हैं यह तपस्या शुरु करने का समय हिन्दी चैत्र वदी और गुजराती फागुन वदी ८ से है. एक दिन उपवास व दूसरे दिन बियासना ऐसा करते करते १३ महिने और ११ दिन गये बाद अक्षय तृतीया के दिन पारणा आता है

तपस्या करते २ जिस रोज उपवास हो और उसके दूसरे रोज चतुर्दशी आदि महान तिथि आजाय तो बेला करने का है तीनो चौमासी के सुदी १४ १५ का बेला करने का है संवत्सरी, ज्ञान पंचमी, और मौन एकादशी के अगले दिन उपवास आया हो, तो भी उपवास करके बेला (छट्ठ) करने का है शुरु करने बाद सुदी तीज के दिन पारणा

आजावे तो वेला (छट्ट) करने का है अत मे वर्षीतप पूरा होने की तैयारी मे हिंदी वैशाक वदी और गुजराती चैत वदी १३ के बाद अक्षय तृतीया तक पारणा नहीं आना चाहिये यदि इतने उपवास करने की शक्ति न हो तो कमसे कम दो उपवास करके ही पारणा करना

आदीश्वर भगवान को शेलडी रसके घडे से पारणा कराया था उसका ही अनुकरण करने के वास्ते छोटा चाढी का नाली वाला घडा बनवाके १०८ वक्त भरके पारणा करवाना यदि साटेका रस न मिले तो शक्कर के पानी से ही पारणा करवाना

पारणा करने वाले तथा करानेवालेने उस दिन तीर्थ स्थान पे जाकर तपस्या छोडना अधिक अच्छा है

जहा तक तप पूरा न हो, वहा तक प्रति दिन २००० मन्त्र का जाप, १२ खमासमण, १२ लोगस्स का काउस्सग्ग और १२ साथिये करना. यदि हमेशा करने की शक्ति न हो, तो उपवास के दिन तो अवश्य ही करना

जापमें ' ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देव नाथाय नमो नमः' गीनना, २० माला गीनने से जाप पूरा होता है इतने मन्त्र बोलने मे अशक्त हो तो ' नमो आदीनाथाय ' इतनाही गीनना

इस वर्षी तपमे घटी हुई व घटी हुई तिथिया घजा करते एकंदर ३२०, उपवास होना चाहिये तपस्या पूरी होने बाद भी हर वर्ष अक्षय तृतीया के दिन उपवास करके जाप, खमासमण, काउस्सग्ग आदि क्रिया करते रहना जिससे जन्म भर यादगीरी बनी रहे

तपस्या पूरी होने पर शक्ति मुताबिक उद्यापन, महोत्सव, पूजन, साहमीवात्सल्य, आदि करना. यदि शक्ति न हो, तो अंत मे निन्यानु प्रकार की एक पूजा पढाना वो भी शक्ति न हो, तो छेवट स्नात्र पूजन पढाके भी संपूर्ण कर देना

स्तुति या चैत्यवंदन

इस अवसर्पिणी कालमें, हुए प्रथम अनगार ।
आदिनाथ जिन साथ में, कच्छ आदि परिवार ॥ १ ॥
पृथ्वी तल पावन कियो, कीनो उग्र विहार ।
एक वरस ऋजु कारणे, मिलियो नहीं आहार ॥ २ ॥
विचरते आये विभु, गजपुर नगर मझार ।
बाहुबली सुत सोमप्रभ, करते राज्य उदार ॥ ३ ॥
भाग्यवान तस पुत्र है, श्रेयांस कुमार ।
देख प्रभु निज पूर्व भव, जान्यो सब अधिकार ॥ ४ ॥
इक्षु रस प्रतिलाभ के, कीनो मार्ग दान ।
वरसी तपका पारणा, किया ऋषभ भगवान ॥ ५ ॥

अक्षय तृतीया स्तवन.

(चाल—धन धन वो जगमें नरनार)

धन धन श्री श्रेयासकुमार, प्रवृत्ति दान करानेवाले ॥ टेक ॥
शुद्ध चित्त नित्त दियो दान, शुद्ध पात्र ऋषभ भगवान ।
फलपायो जग नहीं मान, प्रभु जग तरन तरानेवाले ॥धन॥
हुओ पच दिव्य परकाश, अक्षय तृतिया दिन खास ।
मिले जन श्रेयास आवास, अनुमोदन फल पानेवाले ॥धन॥
निर्दोश अन्न जल नाथ, देवे भरी जो निज हाथ ।
उतर झट पट भव पाथ, प्रभुके ध्यान लगाने वाले ॥धन॥
श्रयास दियो उपदेश, समझे तब लोक अशेष ।
विचरे भू पीठ जिनेस, करम जजाल मिटाने वाले ॥धन॥
सहते परिषह भगवान, विचरे सम सहस प्रमान ।
आतम लक्ष्मी को निदान, हर्ष वल्लभजिन पानेवाले ॥ धन॥

नोट —आचार्य विजयवल्लभसूरिश्वरजी महाराज की बनाई हुई आदिश्वर पच कल्याणक पूजा मे से यह लेकर नाम फिराके चैत्यवदन व स्तवन रूप रखा है

इति अक्षय तृतीया कथानकम्

वीस स्थानक तपस्या विधि

आज कल लोगों में तपस्या ठीक चलरही है इसीस उनको दूसरा पुस्तक देखने की जरुरत न पड़ वास्ते इसमें ही वीस स्थानक व्रतकी विधि डाली गई है

न	पदों के नाम न गुणणा गीननेका पद	माला	काउस्सग्ग	खमा समण	प्रदक्षिणा व मायिये
१	नमो अरिहंताण	२०	१२	१२	१२
२	नमो सिद्धाण	२०	१५	१५	१५
३	नमो पवयणस्स	२	४५	४५	४५
४	नमो आयरियाण	२०	३६	३६	३६
५	नमो थेराण	२०	१०	१०	१०
६	नमो उवज्झायाण	२०	२५	२५	२५
७	नमोलोए सव्वसाहूण	२०	२७	२७	२७
८	नमो नाणस्स (दाणस्स)	२०	५	५	५
९	नमो दसणस्स	२०	६७	६७	६७
१०	नमो विणयस्स	२०	१०	१०	१०
११	नमो चारित्तस्स	२०	७०	७०	७०
१२	नमो बंभवयधारीण	२०	९	९	९
१३	नमो किरियाण	२०	२५	२५	२५
१४	नमो तवस्स	२०	१२	१२	१२
१५	नमो गोयम्मस्स	२०	२८	२८	२८

पद	माला	काउ-सग्ग	समा-समण	प्रदक्षिणा व साथिये
१६ नमो जिणाण	२०	२४	२४	२४
१७ नमो सयमधारीण	२०	१७	१७	१७
१८ नमो नाणस्स	२०	५१	५१	५१
१९ नमो सुयस्स	२०	१२	१२	१२
२० नमो तित्थस्स	२०	५	५	५

जितने खमासमण देना हो उतनेही वार ये दोहे बोल बोलके खमासमण देते जाना

अरिहंत पद १ ला.

परम पञ्च परमेष्टी मे, परमेश्वर भगवान ।
चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिनभाण ॥१॥

सिद्ध पद २ रा

गुण अनत निर्मल हुये, सहज स्वरूप उजास ।
अष्ट कर्म मल क्षयकरी, हुए सिद्ध नमो तास ॥२॥

प्रवचन पद ३ रा

भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि ।
त्रीभुवन जीवको सुखकरी, जयजय प्रवचन दृष्टि॥३॥

आचार्य पद ४ था

छत्तीस छत्तीसे गुणे, युग प्रधान मुणिंद ।
जिनमत परमत जाणता, नमो नमो ते सुरिंद ॥४॥

स्थवीर पद ५ वा

तजि परपरिणती रमणता, लहे निजभाव स्वरूप।
स्थिर करे भविलोकक़ु, जय जय थविर अनूप ॥५॥

उपाध्याय पद ६ ठा

बोध सूक्ष्म विना जीवको, न होवे तत्व प्रतीत।
भणे भणावे सूत्रको, जय जय पाटक गीत ॥६॥

साधु पद ७ वा

स्याद्वाद गुण परिणमिते, रमता समता संग।
साधे शुद्धानंदना, नमो साधु शुभ रंग ॥ ७ ॥

ज्ञान (ग्यान) पद ८ वा

अध्यात्म ज्ञाने करी, नाशे भव भ्रम भीति।
सत्य धर्म ते ज्ञान है, नमो नमो ज्ञानकी रीति ॥८॥

दर्शन पद ९ वा

लोकालोक के भाव जो, केवलि भाषित जेह।
सत्यकरी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥९॥

विनय पद १० वा

शौच मूलमे महा गुणी, सभी धर्म का सार।
गुण अनंतकी जड है, नमो नमो विनय आचार ॥१०॥

चारित्र पद ११ वा

रत्न तीन बिनु साधना निष्फल कही सदीव।
भावरयणका निधान है, जय जय संजम जीव ॥११॥

ब्रह्मचर्य पद १२ वा

जिन प्रतिमा जिन मंदिरा, कंचन का करे जेह।

तेहथी अधिक फल शीलका नमो नमो शीयल सुदेह

क्रिया पद १३ वा

आतम बोध विना क्रिया, यह है बालक चाल ।
तत्त्वारथ से धारीये, नमो क्रिया सुविशाल ॥१३॥

तप पद १४ वा

कर्म खपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण ।
पचास लब्धी उपजे, जय जय तप गुणखाण ॥१४॥

गोयम पद १५ वा

छट्ठ छट्ठ तप करे पारणो, चउनाणी गुणधाम ।
ए सम शुभपात्र को नहीं, नमो नमो गोयम स्वाम

जिण पद १६ वा

दोष अठारे क्षय गये, उपन्या गुण जस अंग ।
वैयावच्च करीये मुदा, नमो नमो जिनपद संग ॥१६॥

संयम पद १७ वा

शुद्धात्तम गुणमें रमे, तजी इन्द्रीय आशंस ।
थिर समाधि संतोषमे, जय जय संजम वंश ॥१७॥

ज्ञान पद १८ वा

ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल ।
अजर अमर पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥१८॥

श्रुत पद १९ वा

वक्ता श्रोता योगसे, श्रुत अनुभव रस पीन ।
ध्याता ध्येयकी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन ॥१९॥

तीर्थ पद २० वा

तीर्थ यात्रा प्रभाव है, शासन उन्नति काज।
परमानंद विलासता, जय जय तीर्थ जहाज ॥२०॥

एक पद के २० उपवास या २० आयबिल या २० एकासणा करना २० उपवास आदि पूरे होने तक एकही पद का गुणना गिनते रहना थीस उपवासादि पूरे होने बाद दूसरे पद का गुणना गिनना इसी प्रकार सब जानो। इस मुताबिक ६ महीने में एक ओली और १० साल में २० ओली पूरी करना

(१)पेहतर खमासमण देकर इरियावही से लोगस्स तक कह फिर खमासमण देकर इच्छा० स भ० अमुक पद आराधनार्थं काउसग्ग करू इच्छ करेमि काउसग्ग कह के अन्नत्थ० आदि कह कर जितने का काउस्सग्ग हो उतने लोगस्स " चंदेसु निम्मल० " तक गिनना

(२)तपस्या के दिन तीन वक्त देव वदन दो टेम प्रतिक्रमण या सामायिक, पर्व तिथि के दिन बन सके तो पौषध भी करना

(३)व्रत पूरा होने बाद शक्ति मुताबिक उद्यापन पूजन आदि पढादेना

नोट—पूर्वाचार्यों की परपरा मे कितनेक पदोंमें काउस्सग्ग खमासमण आदि में फेरफार है जैसे अरिहत पदके १२ है दूसरे में २४ हैं ऐसे मतमतातर लिखनेमे करने वाले शख्स गोटाले में पडजाय यह स्वभाविक ही है इसी लिये सिर्फ एकही आचार्य क मतानुसार विधि लिखी है

तपस्या करने वाले ज्यादह अपठित वर्ग होनेसे उनका अलग २ गुणो के नाम लेकर खमासमण देना बहुत कठिन लगता है वो कठिनाई दूरकरने के वास्ते गुणोंका मथन कर दोहे बनाके रख हैं जिसस सुगमता से खमासमण दमके

॥ वीस स्थानक तप विधि सपूर्णम् ॥

हिन्दी जैनबन्धु मासिक

यदि आप हिन्दी भाषा में जैन धर्म के समाचार, गुजरात काठियावाड में रहते मुनिराजों के हालात, प्रतिक्रमण, जीव विचार आदि के अर्थ तथा और भी कई मार्के की बातें जानना चाहते हो तो इन्दौर से प्रगट होते जैन-बन्धु मासिक के ग्राहक बन जाइये। वार्षिक मूल्य २≡) है

इसके अतिरिक्त यदि आप अपने धार्मिक पर्वों की कथाएं जानना चाहते हैं तो " हिन्दी जैनबन्धु ग्रंथमाला " के हिन्दी भाषा में प्रगट हुए ट्रेक्ट मंगवाकर जरूर देखिये।

आबाल, वृद्ध, पुरुष, स्त्री सबही के पढने योग्य है

किताबों की सूची

१ होली पर्व महात्म्य	कीमत तीन पैसे
२ चैत्री पूर्णिमा महात्म्य	,, ,,
३ शत्रुंजय उद्धार रास	,, ,,
४ अक्षय तृतीया महात्म्य	,, ,,
५ ज्ञान पंचमी महात्म्य	,, एक आना
६ मौन एकादशी महात्म्य	,, तीन पैसे
७ मेरु त्रयोदशी महात्म्य	,, ,,

पता **मैनेजर जैनबन्धु प्रेस,**
पीपलीबजार इन्दौर.

जैनबन्धु प्रिंटिंग प्रेस, इन्दौर

इस कार्यालय में हिन्दी, अंग्रेजी, और संस्कृत की छपाई का काम नई मशीन, नय टाईप, और फेन्सी बार्डर द्वारा साफ, शुद्ध, सस्ता व समय पर किया जाता है जैसे

बुकिंग वर्क, जाबिंग वर्क, रसीद बुके, नकल कैसेल, जैनशास्त्र, हुन्डी, नोटपेपर, कार्ड, लिफाफे, विवाहोत्सव तथा पर्यूषण के कार्ड व कुंकुम पत्रिकादि

इसके अलावा हरकिस्म के कागज थोकबद व फुटकर किफायत भाव से हमारे यहांपर मिलते हैं आशा है एक वक्त आर्डर भेजकर अवश्य लाभ उठावेंगे.

पता —

मैनेजर जैनबन्धु प्रेस,

पीपलीबजार इन्दौर

श्री अर्हते नमः

श्री रोहिणी व्रत महात्म्य

या

साधु की निंदाकरने का फल.

प्रयोजक –मुनि - मानसागरजी
द्रव्यसहायक –शा कस्तुरचंद भगवान
जी मु पाडीव (मारवाड) वासी
हाल मु रायचुर
प्रकाशक –हिन्दी जैनबंधु ग्रन्थमाला,
इंदौर
प्र आ ५०० वीर संवत २४५४
विक्रम स १९८४ ई स १०२७
☞ कीम्मत दो पैसे
नोट –व्रतधारी को तथा पाठशाला में भेट

पाठकों कु खास सूचना

नीच लिखे हुए वर्ताव अमलमें नही लाओगे ता नानकी आशातना के भागी

आप होंगे

१ पुस्तक को इधर उधर रखकर ज्ञान की आशातना नहीं करना

२ पढती वक्त थुक, ज्ञान पर नहीं पडे, इसका खास उपयोग रखना,

३ पढने वाले या पढानेवाले को हलकी जिबान से नहीं बुलाना

४ पढती वख्त गुरूको या पढानेवाले को पहील नमस्कार करना

५ गाथा या पाठ पढने पर भी नहीं आ सके तो मार कर किताब फेकना नहीं

६ सुतक में या काल वख्त में किताब उच्चारस नहीं पढना

७ ज्ञान नहीं आता हो, तो नित्य 'नमो नाणस्स' की एक माला सुबहमें गीनना

८ आशातना के डरसे अपठित नहीं रहना

प्रस्तावना.

लिखीये ग्रन्थमाला का ११ वा पुष्प रोहिणी महात्म्य का इसम साधु की निंदा करनसे तथा अशुध्य आहार देनेसे कैसी कैसी आपत्तिया आतीहै, फिर गुरु महाराज का उपदेश से व्रत आराधन करनसे कैसी उत्तम सपदा मिलती हे वो सर्व विस्तारसे बतला गया है

रोहिणी पर्व किस विधि से आराधन करना, ज्यादह शक्ति न हो तो किस तरहसे करना, व्रतका चैत्यवंदन स्तवन स्तुति वो सब खुलाशा वार बतला गया है

गुजराती में जो कथा छपी है, उनपर से अनुवाद कर गुजराती नही समझने वाले के लिये सुगमता कीइ है

इस किताब में मु पाडीव (मारवाड) वासी श्रेष्टि कस्तुरचंद भगवानजी ने १०० नकलकी पूर्ण सहायता दे ज्ञान भक्ति बतला अपनी उदारता बतलाइ है इस मुजब अन्यने भी सहायता दे ज्ञान का फैलावा करना चाहिये

बीजवाडा,
डी० कृष्णा

ले मानसागर,
ता ७-११-२७
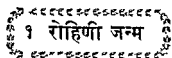
ॐ श्री पार्श्वनाथाय नम

रोहिणी कथा

१ रोहिणी जन्म

ज किंचि बछइ मणे, त सव्व हुइ तवप्पभावण।
इट्ठेण सम जोगो, हवइ विओगो अणिट्ठण॥१॥
उच्छिट्ठमसुन्दरय, भत्त तह पाणग च जो देइ।
साहूण जाणमाणो, भत्त वि न पचइ जस्स॥२॥

अर्थ—जो कुछ मनमे इच्छा करे, वह सब तप के प्रभावसे प्राप्त होता है इष्ट वस्तुका सयोग होता है, और अनिष्ट वस्तुका वियोग होता है। उच्छिष्ट विरुद्ध अथवा जूठन आदि, व असुदर अर्थात् खराब आहार भात तथा पानी जो जीव जान बूझ कर साधु को देता है, तथा आहारादिक भोजन करने परभी जिसको पचता नहीं ऐसा अन्न देने वाले को ऐसा अनिष्ठ होता है, तथा कैसी कैसी दुरवस्था होती है इसके उपर रोहिणी की कथा कहता हूं। हे भव्यलोको! ध्यानपूर्वक सुनो

श्री चम्पानगरी मे श्री वासुपूज्य तीर्थंकर का पुत्र मघवा नामक नीतिवान राजा राज्य करता था उसकी राणी लक्षमणा भी नीति

वान हो सद्‌गुणी थी उसको अनुक्रमसे आठ पुत्र उत्पन्न हुए जैसा लाभ होता है वैसी२ लोभ्यता भी बढती है फिर भी रानी ने लोभवश हो विचार किया की एक पुत्र औरभी हो तो अच्छा हो- यह विचार करने पर आठ पुत्रों के पश्चात पुत्रक बदल उसको नवमी एक पुत्री हुई वह पुत्री माता पिता को बडी वल्लभ थी उसका रोहिणी नाम रखा उत्तम प्रकार स लालन पालन करत हुए जब वह बडी हुई, तब पढ लिख कर सर्व कलाए सीख कर महा चतुर होगई
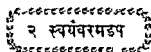
२ स्वयंवरमंडप

रूप लावण्य गुणमयुक्त हुई अनुक्रमसे उसने यौवनावस्था में पदार्पण करते ही राजा ने विचार किया, कि अगर राजकुमारीको योग्य वर मिले तो अत्युत्तम हो तदनुसार स्वयंवरमंडप स्थापित किया उसमे कुरु, कौशल, लाट, कर्णाट, वैराट, मेदपाट, गौड, चौड, द्राविड, मगध, मालव, सिंधु, सोराष्ट गूर्जर, कोंकण, कच्छ, जालन्धर, नाग पुर, आंध्र आदि देशों के विद्याधर राजा तथा अन्य बडे बडे राजाभी एकत्रित हुए. सबक डेरे तंबू लग गये राजा ने पुत्री को सोलहो शृंगारों से सजाकर हाथ मे वरमाला दे स्वयंवर मंडप मे भेजी दासी सबके आगे हाथ में आरसी ले राजाओं का वर्णन करती हुई राजा कुमारों के रूप दिखाने लगी "बाई साहेब" यह मगध देश का राजा कांतिवान है, यह लाटाधिपति उमरसे दो साल आप से कमती है यह कौशल देशका कुशलपति महाराजा कि जिसके चार राणीया

गोहो चुकी है यह सिंधुपति महाराजा जिसकी आमदनी १२ लाख की है" इसी प्रकार प्रत्येक राजकुमार को आरसीमें देखती हुई, तथा वर्णन सुनती हुई राजकुमारी ने नागपुर नगराधीश वीतशोक राजा के पुत्र अशोककुमार के गले में वरमाला पहिराई योग्यवर देखकर सब लोग हर्षित हुए कन्या के पिता ने भी भारी महोत्सव के साथ विवाह किया तथा अशोककुमार को भी बहुतसे हाथी घोड़े दास, दासी, स्वर्ण रौप्य आभूषण आदि कन्यादान में देकर नागपुर को पहुंचाया राजा वीतशोक ने भी अपने पुत्र को महोत्सवपूर्वक नगर में प्रवेश कराया

३ पुण्यप्रभाव
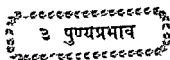
कुछ काल व्यतीत होनेपर वीतशोक राजा ने शुभ मुहूर्त में अशोक कुमार को राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण की तत्पश्चात अशोक राजा राज्यसम्पदा तथा स्त्री के साथ सासारिक सुख भोगने लगा। रोहिणी के आठ पुत्र व चार पुत्रियां हुई। इस भांति राजा राणी दोनो आनन्द का उपभोग करने लगे।

एक दिन राजा राणी उभय दंपति महल के झरोखे में बैठे था। उस महल के पीछे एक व्यवहारिया रहता था। उसका पुत्र मरगया। उस समय उस पुत्र के माता पिता तथा अन्य कुटुम्बी आदि मिल कर मोहदशावश हो बड़े शोक के साथ रोने पीटने लगे। यह दृश्य

देख कर रोहिणी अपने पतिसे पूछने लगी। 'हे स्वामी! यह कौनसा नाटक है?' यह सुन राजा बोला —

'हे राणी! क्या? यह नाटक होता है? नाटक हर्षका होता है, या रोनका? तू रोना भी क्या नहीं समझ सकती? कि इतना मद करती है वास्ते तू अहंकार मत कर अभी तो तू धन यौवन के मदमें मदोन्मत्त है, परन्तु चतुर मनुष्य को मद करना योग्य नहीं यह संसार अनित्य (विनाशवान) है' यथा —

> 'धन जोबन ठकुराइया, सदा सुरंगी न होय ॥
> ज्यों कला त्या मानसा, छाह फिरती जोय॥'

'अर्थ — धन, सुन्दरी, ऐश्वर्यता आदि नित्य एक सरखा नहीं रहता वृक्षकी छायाकी मुताबिक मनुष्यकी अवस्था भी फिरती रहती है'

'यह अस्थिर रूप है, इसका तू क्या मद करी रही है?" यह सुन राणी नम्रतासे बोली —"हे स्वामी! मेरे पर गुस्से हो आप व्यर्थ आपनी बातको क्यों समर्थन करते हो? मैं तो कुछ भी गर्वसे नहीं बोलती, परतु मैंने ऐसा नाटक इस भवमें कभी न देखा, इसलिये आपसे पूछती हूं इस पर आप तिरस्कारकी बातें करके मदोन्मत्त क्यों कहते हो?" तब राजा बोला —"अच्छा देख, मैं तुझे अभी नाटक खेल बताता हूं, कि जिससे तूभी स्वयही ऐसा नाटक करना सीख जायगी"

इतना कह कर रानी की गोद में खेलता हुआ पुत्र को उठा कर महल से नीचे फेंक दिया। यह दृश्य देख सब लोग हा! हा! कार करने लगे परन्तु गृहिणी को तिल मात्र भी दुःख नहीं हुआ वह इस विषय में कुछ समझी भी नहीं, कि राजा क्या काम करता है, कि जिससे मुझे दुःख पैदा होगा!

इधर ज्यों ही वह बालक नीचे गिर रहा था, त्यों ही मध्य में ही पृथ्वी ने उसे हाथों में झेल लिया। वह पुत्र भी परम भाग्यशाली था, इसमें देवतान उसकी रक्षा की। बालक को जीवित देख कर सर्व जनसमूह आश्चर्यान्वित होगये, तथा अत्यन्त हर्षित हुए। यह अनुपम दृश्य देख कर राजा कहने लगा कि, हे रानी! मे तुझे रोने की कला सिखाता था, परन्तु पूर्व भव में तूने कोई भारी पुण्य उपार्जन किया है इससे तुझ दुःख नहीं देखना पडा। अस्तु, इस बात का निश्चय तो कोई ज्ञानी महाराज यहा पधारेंगे तब उनको तेरे पूर्वभव का वृत्तान्त पूछ के निश्चय करूंगा

महाशयो! पुन्यका प्रभाव एक ओर ही है [illegible] रानी को दुःख भी न हुआ, और पुत्रको कुछ [illegible] भी नहीं हुई।
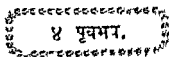
४ पूर्वभव.

कुछ काल बाद एक समय [illegible] कुम्भ व स्वर्णकुम्भ नामक दो [illegible]

राजा रानी उनको वन्दन करने गये। उन्होंने धर्मोपदेश दिया। राजा ने पूछा, "हे महाराज! मेरी इस रानी रोहिणी ने पूर्व भवमें क्या सुकृत किया है? कि जिसका योग से इसको कुछ भी दुःख नहीं होता, मेरा भी इस पर पूर्ण स्नेह रहता है साथ ही संतान का भी सुख है"। यह सुन मुनिराज कहने लगे, "हे राजन्! सुन"

"यह पूर्व भव में उज्जयतगिरि पुर के राजा पृथ्वीपाल की सिद्धिमति नामक रानी थी एक समय रानी सहित राजा वनक्रिडा करने गया, उसी अवसरमे वहां मासक्षमण का पारणा के लिए गुण सागर नामक मुनिराज को नगर की ओर आते हुए देख कर राजा ने उनको वन्दना कर नमस्कार किया, और रानी से कहा कि, "प्रिये! ये महाऋषीश्वर जंगम तीर्थ है, घर जाकर इनको शुद्ध आहार दो"

यह सुन रानी ने गुस्सेसे मनमे विचार किया कि "ये मुंडी मुझे विषय सुख से अलग करने के लिये कहां से आ टपका! अरे! इस साधुको इतना व्यवहारज्ञान भी नहीं है? कि दोनों नृपती जहां खड़े हों, वहां नहीं जाना उसको बराबर शिक्षा देनी चाहीये' इस भांति बड़बड़ाती, रोष करती कड़वा तुम्बा का शाक था वही मुनिराज को बहोरा दिया

"हे राजन्! विषयवासनाके वश हो मनुष्य कौनसा नीच कार्य नहि कर सकता? वैसाही वो स्त्रिने किया उसे लेकर ऋषीश्वरने विचार किया कि यह अन्न जहां परठूंगा वहां अनेक जीवों का संहार

मे नरा हाथ मलता है तो जानेगे, मै तुझ दुसरी बहुत सी कन्याए विवाह दूगा'। यह कह वह सेठ अपने पुत्र को लेकर घर चला गया

इधर कन्या का पिता भी नित्य वर की चिंता करने लगा। एक दिन कोई महाल्पमान भिखारी आया सेठने उससे कहा कि, जो तू मेरे घर रहे तो मैं तुझ मेरी कन्या विवाह दू। भिखारी बोला कि, मा आप रखोंगे तो रहूगा। तत्पश्चात् सेठ ने उसके मैले कपडे उतार स्नानादिक करा, नवीन वस्त्राभूषण पहरा कर कन्याकी साथ विवाहकर घरमें पर रखा। रात समय चित्रशाला पर जाकर कन्या के पास जाने ही अति दुर्गन्धि आने लगी। यह देख भिखारी ने विचार किया 'अरे' मैं कहाम इधर आया? ऐसी दुर्गन्धमय व अभिनिनमान स्त्रीकी साथ रहकर क्या मेरा भव बिगाडू? नहीं, नहीं ऐसे सुख सौ मेरा माग कर पेट भरनाही उत्तम है, परतु यह स्त्रीसुख मेरे काम का नहीं" इस तरह विचार कर सर्व वस्त्रालकार उतार डाल और अपने प्राचीन मैले कपड़ पहन कर परदेस चला गया

पूर्व भव चालु तप प्रभाव

प्रातःकाल पिता ने दासी को कहा की, तू झारी, दातौन, मेवा, मिठाई, आदि कुमारी के पास ले ना। तदनुसार सब दासी सब

सामग्री लेकर कुमारी क पास गई तो क्या देखती है कि, दुर्गन्धा अकेली बैठी हुई रो रही है। दासी ने जाकर माता पिता से यह वृत्त कहा

तब माता पिता आकर पुत्री को समझाने लगे 'हे वत्से! कर्म से बलवान कोई नहीं, तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, एसे २ महान् पुरुषों से भी कर्म टल नहीं सका तो भला आपन किस गीनती में है? इसलिये अब तू बैठी बैठी धर्म कर। धर्म के प्रभाव स कर्म नाश हो सब सुख आ प्राप्त होंगे" यह सुन कुमारी ने भी मनमें सवग भाव ला जप तप करना प्रारम्भ किया

एक समय वहा ज्ञानी गुरू पधारे। उनको सेठ ने पूछा कि, 'महाराज! मेरी पुत्री को यह रोग क्यों हुआ'? तब गुरू ने उसके पूर्व भव का वृत्तान्त कह सुनाया। सेठ ने पुन पूछा कि, 'हे गुरुवर्य! इस रोग क नाश होने का उपाय कुछ है या नही?

गुरू बोले 'हे श्रेष्ठि! नाश होनेका उपाय है सून तू इससे सात वर्ष सात मास पर्यन्त रोहिणी का तप कराना। वह इस प्रकार कि, जिस दिन रोहिणी नक्षत्र आवे, उस दिन चौविहार उपवास करना, और ध्यान सहित श्री वासुपूज्य भगवान की रत्नमय या धातुमय प्रतिमा की पूजा करना तप पूर्ण होने पर भलीभांति उजमणा करना जो इस तरह कराओंगे तो सुगध राजकुमार क समान इसके भी सर्व दु ख मिट जावेंगे' तब दुर्गन्धा न पूछा कि, 'वह सुगन्ध-

राजकुमार कौन था सो मुझे कहिये' तब गुरुने कहा '—सिंहपुर नगर के सिंहसन राजा की कनकप्रभा नाम रानी थी उसके एक पुत्र हुआ वह अतिशय दुर्गन्धता युक्त था, इससे वह सब को अप्रिय था। एक बार उस नगर में पद्मप्रभ स्वामी समोसेरे । कुटुम्ब परिवार सहित राजा ने उभय कर जोड पूछा कि 'हे भगवान्! मेरे पुत्र के दुर्गन्धि होने का क्या कारण है? इसने पूर्व भव में क्या कर्म किया है?' तब भगवान कहन लगे

"नागपुर से बारह योजन दूर नील पर्वत पर एक शीलाके उपर मासोपवासि साधु धर्मध्यान करते थ, उनको एक व्याध सताने लगा। एक समय वह साधु आहारके लिये गावम गया, इतनेमे व्याध ने उस शीला पर अग्नि सिलगाई और उस शिला को अग्नि सम जलती कर दीइ। साधु उस पर आकर बैठ और उष्ण परिसह सहन कर केवलज्ञान पा मोक्ष को प्राप्त हुए। पश्चात् वह व्याध दुष्ट कर्म स कुष्टी होगया। मर कर सातवी नरक में गया, फिर सर्प होकर पाचवीं नरक में गया, फिर सिंह होकर चौथी नरक म गया, पुन चित्रक होकर तीसरे नरक में गया, पश्चात् मार्जार होकर दूसरे नरक में गया और फिर उल्लू होकर प्रथम नरक में गया"

'इतने भवों में भ्रमण करके अत में एक श्रावक के घर उत्पन्न हुआ, और पशुपाल का धादा करने लगा। श्रावक होने से नवकार सीखा। एक बार वन म दावाग्नि लगी और उसमें सोया

हुआ वह पशुपाल भी मृत्युवश हुआ। अन्त समय में नवकार स्मरण किया, इसस हे सिंहसेन राजा! यह तेरा पुत्र हुआ, और शेष कर्म के दोष स दुर्गन्धित हुआ'

इस भांति पूर्व भव श्रवण करते ही उस राजकुमार को जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ, उसने भगवन्त के चरण छू कर पूछने लगा कि, मैं इस दोष स कैसे मुक्त होउंगा? तब जिनेश्वर ने कहा कि, तू रोहिणीका तप कर उससे सर्व व्याधि दूर होगी। तदनुसार उस राजकुमार ने रोहिणी का तप किया और उसके प्रभाव से उसका शरीर सुगंधित हुआ

इस लिये हे दुर्गन्धे! तू भी यह तप कर। इसके प्रभाव से सुगंध कुमार की भांति तेरे भी दु ख सम्पूर्ण नाश होंगे

८ आराधना
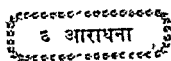
यह सुन दुर्गन्धा ने रोहिणी तप अंगीकार किया। शुभ ध्यान पूर्वक तपस्या करते, आत्म निन्दा करते दुर्गंधा को जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ, उसमें पूर्व भव स्मरण होगया और उसने विशेषता से तप करना प्रारंभ किया। आयु पूर्ण होनेसे शुभध्यान में मृत्यु को प्राप्त हो देवलोक में देवता पनमें उपजी। वहां से च्यवन कर यहां चंपा नगरी में मघवा राजा की पुत्री हुई, उसका नाम रोहिणी

पडा, उसी के साथ तुम्हारा विवाह हुआ है। इसने बहुत दान किया है, उससे तेरी पटराणी हुई है। इसने पूर्व भव में रोहिणी तप किया है उसके प्रभावसे दुःख क्या चीज है? उसे यह जानती ही नहीं। तथा उजमणा किया उसके प्रभाव से इसने ऋद्धि पाई है

हे राजन्! तू भी इस रोहिणीका पति किस तरह हुआ? वोभी सुन उस सिंहसेन राजाने सुगंध कुमार को राजपाट पर स्थापित कर दीक्षा ग्रहण की। सुगंध राजा राज्य का पालन करता हुआ, तथा धर्मकृत्य करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होकर देवलोक को गया वहा से च्यवन कर पुष्कलावती विजयमें पुडरिगणी नगरी में केवल कीर्ति राजा के घर अर्ककीर्ति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। वहा दीक्षा ले बारहवें देवलोक में इन्द्र हुआ। वहा से च्युत होकर यहा तू अशोक राजा हुआ है

तेरी रानी तथा तू दोनों जनों ने मिल कर पूर्व भव में समान तप किया है, इसलिये तेरा स्नेह इसपर बहुत है
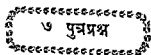
फिर राजाने पूछा कि, 'हे स्वामिन्! मेरी स्त्री को जो आठ पुत्र व चार कन्यायें हुए है व कौन से पुण्योदय से हुए है। तब गुरु बोले कि, हे महाभाग्य! इनमें से सात पुत्र तो पूर्व भव में मथुरा नगरी में अग्निशर्मा नामक एक भिखारी के घर में जन्मे थे।

दारिद्र कुल में उत्पन्न होने से सातों भीख मागनेकु जाते थे, परन्तु उनको कोइ मकानकी पास खडा भी नहीं रह देता था जहा जाते वहा धक्का दे दे कर बाहर निकाल दिये जाते थे

इस भाति वे ग्राम ग्राम भ्रमण करते, भीख मागते हुए एक समय पाटलीपुर में गये। वहा उन्हों ने राजपुत्र तथा प्रधान पुत्र को देखा और मनमें बडे आश्चर्य चकित हुए। उस समय ज्येष्ठ भाई ने छोटे भाईओं कु कहा कि हे बधु! आपन भी मनुष्य है, और ये भी मनुष्य हे परन्तु आपन में और इनमें इतना अतर क्यों है? यह सुन उनमेसे एक छोटा भाई बोला, कि इन्हो ने पूर्व भव म पुणयकर्म किये है उनका फल भोगते है। और अपन पुण्य हीन हे जिससे घर घर भीख मागन हे

पश्चात् भ्रमण करते २ बन में गये, वहा एक साधु मुनिराज काउस्सग्ग ध्यान में स्थित थे, उनके पास जाकर खडे रहे और साधु ने भी काउस्सग्ग पाल दया आन कर धर्मोपदेश दिया। जिसे धर्म सुन सातों भाइ वैराग्य को प्राप्त हो दीक्षा ले चारित्र पालनकर, मृत्युवश हो देवलोक में जा देवता हुए वहा से च्यवन कर तेरे यहा सात पुत्रों का स्वरूप से उत्पन्न हुये हुए हे

तथा वैताढय पर्वत पर एक भिल्ल विद्याधर शाश्वत जिन प्रतिमा कि पूजा करता था वह मर कर सौधर्म देवलोक में देवता हुआ, वहा से च्यवन कर लोकपाल नामक तेरा आठवाँ पुत्र हुआ है

८ पुत्री वृत्तांत

हे गुरुजय! मेरी तथा मेरी पत्नी की तथा मेरे पुत्र की बात बराबर समझमें आइ परन्तु मेरी ये चार पुत्रीओ किस तरह मे हुइ? सो कृपाकर मुझ समझाइये गुरुने कहा? 'हे राजन्! ये जो तेरी चार कन्याए है, व पूर्व भव में विद्याधर राजा की पुत्रिया थी। यौवन वात म एक दिन बागमें रमण करने गई, वहा साधु को खडे हुए देखा। साधु ने उनसे कहा कि 'हे कुमारिया! तुम कुछ कुछ धर्म तो करो' तब उन्हों ने कहा, 'हम तो धर्म ध्यान कुछभी करणी नही करेंगी' तब साधु ने कहा कि, अरी 'तुमारा आयुष्य बहोत स्वल्प रहा है, इसलिये धर्मकरणी म तुमने प्रमाद नही करना चाहिए' यह सुन उन कुमारिया ने पूछा, 'गुरुजी हमारी आयु कितनी बाकी रही है?' साधु बोला 'आठ प्रहर शेष रहा है'। तब वे बहोत दिलगीरी से कहने लगी हे कृपानिधि! 'इतने स्वल्प काल म क्या पुण्य होवे'? मुनि ने कहा, 'ज्ञानपंचमी का तप करो'। कहा है कि —

> ज नाणपंचमिवय, उत्तमजीवा कुणंति भावजुया।
> उवभुंज अणुवमसुह, पावंति केवल नाण॥ २॥

अर्थ —'जो उत्तम मनुष्य भावसहित ज्ञानपंचमी का तप करते है, वे उसके फल से अनुपम सुख भोग मनुष्य हो केवलज्ञान को पाते है

यह उपदेश सुन उन कुमारियों ने घर आ उसी दिन ज्ञानतप उपवास का पचक्खाण लिया ज्ञान की माला आदि गीत देवकी भक्ति कर एक ही दिन अपने आतमा को कृतार्थ मान एक ही जगहमें चारों जनी शुभ ध्यानमें बैठीं। इतने ही में विद्युतपात हुआ उससे चारों कुमारियाँ मृत्युको प्राप्त होकर देवता हुई, और वहां से च्यवन कर ये तेरी पुत्रियाँ हुई है'

९ दीक्षा
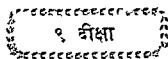
यह बात सुनते ही राजा तथा रानी को जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ। पूर्व भव सुनकर वैराग्य को प्राप्त होकर घर आये। फिर एक समय श्री वासुपूज्य भगवान आ समोसरे। उनको राजा तथा रानी परिवार सहित वंदना करने गये। वहा प्रभु का उपदेश सुन कर आ पुत्र को राज्यपद पर स्थापित कर, सातों क्षेत्रों म कितना ही धन व्यय कर चारित्र अंगीकार कर दोनों जने मोक्षको प्राप्त हुए। इसी भांति भव्य जीवों न भी रोहिणी का तप शुभ भाव म करना चाहिये॥

शेष विधि

१ जिस दिन रोहिणी नक्षत्र आव, उस दिन से तपस्या शुरु कर साढे सात वर्ष तक प्रति रोहिणी के दिन चोविहार या तिविहार उपवास करना स्त्री या पुरुष कोइ भी कर सकता है

२ उपवास क दिन 'ओं ह्रीं श्री वासुपूज्याय नमोनम' इस मंत्र की २० माला गीननी

३ बारह खमासमण, बारह साथिया तथा बारह लोग्गस्सका काउस्सग्ग करना, तीन एक देववंदन करना दो वक्त प्रतिक्रमण करना विशेष वख्त न मिले तो एक वक्त देववंदन या एक सामायिक करना

४ स्त्री जाती को तीन दिनका कारणसर जाप काउस्सग्ग आदि न बन शके तो उपवास तो जरूर ही करना चार दिन बाद शेष विधि करना

५ खमासमण देकर इरियावही से लोग्गस्स तक कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवान् रोहिणी तप आराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग' कह अनत्थ कह बारह लोगस्स या ४८ नोकार का काउस्सग्ग करना

६ खमासमण देनी वक्त नीचेका दूहा बोलकर खमासमण देना

दोहा

रोहिणी का तप करो, भाव आणी मन शुद्ध।
कर्मगतूरो दूर करके, करो आतमा शुद्ध॥१॥

७ किसी शख्स या किसी स्त्री को देववदन सामायिक या प्रतिक्र-मण विधि नही आ सकती हो, तो मंदिर म छोटा चैत्यवदन तथा तीन माला पक्की गीनना

रोहिणी का चैत्यवंदन

रोहिणी तप आराधीये, श्री श्री वासुपूज्य।
दु ख दोहग दूरे टले, पूजक होये पूज्य॥१॥

पहिला कीजे वासक्षेप, प्रह उठीने प्रेम।
ऽ
मध्यान्हे करी धोतीआ, मन वच काया खेम॥२॥

अष्ट प्रकारनी रचीये, पूजा नृत्य वाजित्र।
भाव भावना भाविये, कीजे जन्म पवित्र॥३॥

त्रिहु काले लेइ धूपदीप, प्रभु आगल कीजे।
जिनवर केरी भक्ति शु, अविचल सुख लीजे॥४॥

जिनवरपूजा जिनस्तवन, जिननो कीजे जाप।
जिनवर पदने ध्याइए, जिम नावे सताप॥५॥

कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर भेद।
मान कहे ए विधि करो, ज्यु होवे भवनो छेद॥६॥

ऽ शुध्ध वस्त्र पहन पूजन करना

रोहिणी स्तवन

(राग नाग्र की चाल)

वासुपूज्य पूजो प्राणी, प्रभु है अनतज्ञानी।
प्रभु सब गुणखानी, जीवको सरन है। वा० १॥

प्रभु प्यारो प्राण जान, आतम आधार मान।
प्रभु क ही शुभ ध्यान, मिग्त मरन है। वा० २॥

दाता निर्भय दान, ताता शिवसुख थान।
प्रभु को मति पिछान, तारन तरन है। वा० ३॥

वसुपूज्य राय तात, जया राणी मात जात।
सुरनर न्नि रात, पूजन चरन है। वा० ४॥

आतम आनन्द कन्द, जिन लक्ष्मी रूप चद
वीर गुण कन्द पद, वल्लभ परन है। वा० ५॥

स्तुति

पूजो जिनवर बारमा, उपदेसे श्रग बार,
द्वादश व्रत श्रावक तणा, द्वादश प्रतिमा सार।

राहिणी तप भी आदरो, आणी मन उमग,
व्रत पूरे करो उजमणा, होवे शिववधु मग॥१॥

नोट–उपवास कीया किन न हो, तो आयंबीलसे भी यह व्रत हो सकता है

॥ इति श्री रोहिणी कथा महात्म्य समाप्तम् ॥